देशभक्त महाराणा प्रतापसिंह

— जगदीशसिंह गहलौत

॥ ओ३म् ॥

देशभक्त महाराणा प्रतापसिंह

(संक्षिप्त सचित्र जीवन)

लेखक :—

श्री ठा० जगदीशसिंह जी गहलौत,

एम० आर० ए० एस०

प्रकाशक :—

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड,

पाटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली।

मुद्रक :—

सार्वदेशिक प्रेस,

पाटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली-७

प्रथमबार १०,००० | विजयदशमी २०१२ विक्रमी | मूल्य ‒)

सिंह

पाटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली।

मुद्रक :—
सार्वदेशिक प्रेस,
पाटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली-७

प्रथमवार १०,००० } विजयदशमी २०१२ विक्रमी { मूल्य -)

राजस्थान के प्रसुप्त सिंहों को जगाने वाले
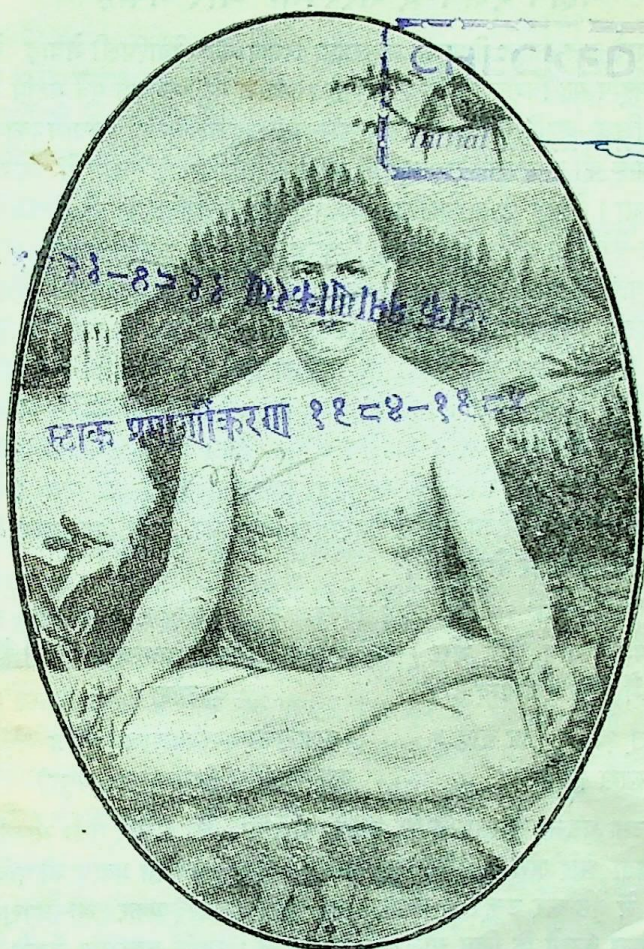
वैदिक धर्मोद्धारक आर्य समाज प्रवर्तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(आपको इसी ध्येय की पूर्ति के लिए जोधपुर में विष पान करना पड़ा)

नोट:—महर्षि जी ने ४ महत्वपूर्ण पत्र जो उदयपुर और जोधपुर के नरेशों को लिखे थे वह मनन करने योग्य है—प्रकाशक

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती और मेवाड़

आर्य कुल कमल दिवाकर महाराणा प्रताप की क्रीड़ास्थली मेवाड़ के साथ महर्षि का विशेष सम्बन्ध रहा है। आज से ७३ वर्ष पूर्व महर्षि ने जगत्प्रसिद्ध क्रान्तिकारी; स्वराज्य-मूल-मन्त्र-प्रदाता ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश भी मेवाड़ की राजधानी उदयपुर में ही महाराणा जी के स्थान में बैठकर लिखा था। मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा श्री सज्जनसिंह जी को महर्षि ने योग-वैशेषिक दर्शन, मनुस्मृति, विदुरप्रजागर आदि ग्रन्थ पढ़ाये, योग की क्रियाएं सिखाई तथा राजधर्म के उपदेश दिये थे। महर्षि ने देश-देशान्तर में वैदिक धर्मप्रचारार्थ परोपकारिणी सभा स्थापित करके उसका प्रधान भी श्री महाराणा जी को ही बनाया था। महर्षि ने गौ आदि पशुओं की रक्षार्थ *'गौकरुणा निधि'* लिख कर श्री महाराणा जी को भारत भर में गोवध निषेध कराने के लिए प्रेरित किया था। इस पर महाराणा जी ने जोधपुर नरेश श्री महाराजा जसवन्तसिंह जी से पत्र द्वारा परामर्श किया, महाराजा ने इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर महाराणा जी के पास इस प्रकार भेजा था।

"म्हारी प्रजा १४,६१, १५६ हिन्दु, ने १,३७,१०६ मुसलमान यां तोनु पशु (गाय, बैल, भैंस) नहीं मारिया जावणारा प्रबन्ध में खुशी हैं। और मैं पिण रजाबन्द हां।"

दस्तखत

सम्बत् १६३६ पौष बदि ५ — राजराजेश्वर महाराजाधिराज

खास मुहर — जसवन्तसिंह (मारवाड़ जोधपुर)

उक्त घटना से स्पष्ट है कि महर्षि, गौरक्षा, वेद प्रचार तथा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का संचालन, स्वातन्त्र्य वीर महाराणा प्रताप की पवित्र भूमि में बैठ कर उन्हीं के वंशधर आर्य कुलकमल दिवाकर श्री महाराणा जी द्वारा कराने के लिए योजना बना रहे थे। महर्षि अनुभव करते थे कि जो राजवंश सदैव स्वतन्त्रता के समराङ्गण में जूझता रहा तथा जिसका ध्येय सदा से "*जो दृढ़ राखे धर्म को, तिहि राखे करतार*" रहा है उनमें ही देशोत्थान के भाव उत्पन्न किये जायें। इसी लिए महर्षि एक

बार ही नहीं—अनेक बार, मेवाड़ की पुण्यभूमि उदयपुर में, कभी शाह-पुर और कभी बनेड़े में बारम्बार पदार्पण करते रहे, मेवाड़ के इन नरेशों को महर्षि ने अनेक पत्र लिखे, उपदेश दिये तथा राजस्थान के विभिन्न राज्यों में इष्ट सिद्धि के लिए भ्रमण करते रहे।

महाराणा प्रताप और उनकी पुण्य भूमि मेवाड़ के प्रति महर्षि का महान् सम्बन्ध होने के कारण आर्य जगत् भी मेवाड़ की राजधानी उद-यपुर को मथुरा और टंकारा के समान ही ऋषि भूमि अनुभव करता है तथा वह दिन दूर नहीं, जब सम्पूर्ण आर्य नर-नारी सम्वत् २०३६ के भाद्रपद शुक्ल पक्ष में '*सत्यार्थप्रकाश*'' की शताब्दी मनाने के लिए उदय-पुर में एकत्रित होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती और महाराणा प्रताप के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करेंगे।

महर्षि की इसी भावना से प्रभावित होकर हम भी स्वतन्त्रता के पुजारी महाराणा प्रतापसिंह का छोटा सा, किन्तु सारगर्भित ३० चित्रों सहित जीवन चरित्र, धन लाभ के लिए नहीं—केवल प्रचारार्थ लागत मात्र मूल्य पर प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है आप हमारे इस प्रयास का वैसा ही स्वागत करेंगे जैसा गत २-३ वर्षों से हमारी अन्य पुस्तकों का। हमारी इच्छा है कि यह पुस्तक देश भर के विद्यार्थियों में मुफ्त वितरण की जाय, जिससे उनमें वीरत्व के भाव जागृत हों। हमें प्रसन्नता है कि गत २-३ वर्षों में हमने ५-६ लाख पुस्तकें केवल लागत मात्र पर प्रकाशित करके वैदिक धर्म प्रचार की दिशा में कुछ कार्य किया है।

प्रस्तुत पुस्तक प्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्री ठा० जगदीश सिंह जी गहलोत एस० आर० ए० एस० की विख्यात पुस्तक "*राजपूताने का इतिहास*" से संकलित की गई है। जिसके लिए हम श्री ठाकुर साहब के आभारी हैं।

कविराज हरनामदास बी० ए०
प्रकाशनाध्यक्ष

महाराणा प्रताप और उनके पूर्वज

महाराणा कुम्भा जी

महाराणा उदयसिंह जी
(महाराणा प्रताप के पिता जी)

महाराणा सांगा जी

'राणा सांगा अपनी बहादुरी और तलवार के बल बहुत बड़ा हो गया था। मालवा दिल्ली और गुजरात का कोई अकेला सुलतान उसे हराने में असमर्थ था। उसके राज्य की वार्षिक आय १० करोड़ थी। उसकी सेना में एक लाख सैनिक थे। महाराणा सांगा के उत्तराधिकारी भी ऐसे ही होते तो मुगलों का राज्य भारतवर्ष में जमने ही नहीं पाता।''

—बादशाह बाबर

॥ ओ३म् ॥

देशभक्त महाराणा प्रतापसिंह

वीर शिरोमणि, स्वतन्त्रता के पुजारी, अपने कुल गौरव के रक्षक, आत्माभिमान के अवतार, प्रातः स्मरणीय प्रताप वि० सं० १५९७ ज्येष्ठ सुदि ३ रविवार (९ मई सन् १५४० ई०) को सूर्योदय से ४७ घड़ी १३ पल गये उत्पन्न हुए थे और जिस समय उनके पिता (महाराणा उदयसिंह) की मृत्यु हुई उस समय उनकी अवस्था ३२ वर्ष की थी।

महाराणा उदयसिंह को अपनी भटियानी रानी से बड़ा प्रेम था। इसीसे उन्होंने अपने पुत्र जगमाल को—जो नवां पुत्र होने के कारण राज्य का अधिकारी नहीं हो सकता था—अपना उत्तराधिकारी बना दिया। जब महाराणा उदयसिंह की अन्त्येष्ठी के समय राजकुमार जगमाल को उपस्थित न देखा तो ग्वालियर के राजा रामसिंह तंवर ने इसका कारण पूछा। इसके बाद अनधिकारी जगमाल के युवराज पद की बात सुनकर सब सरदारों ने इकट्ठे हो ज्येष्ठ राजकुमार प्रतापसिंह को कुम्भलगढ़ में राजसिंहासन पर बिठाया। जगमाल इससे नाराज होकर अकबर के पास चला गया जिसने उसको जहाजपुर का इलाका जागीर में दिया। बाद में बादशाह ने सिरोही का आधा राज्य जगमाल सिसोदिया को दे दिया। इस पर सिरोही के राजा सुरतान देवड़ा से उसका वैर बंध गया और अन्त में सं० १६४० (ई० सन १५८३) के युद्ध में जगमाल काम आया।

जिस समय महाराणा प्रतापसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठे, राजस्थान की स्थिति नाजुक हो रही थी। अकबर के तेज बल के आगे राजपूताने के कई नरेशों ने शिर झुका लिये थे और अपने पूर्वजों की मान मर्यादा की पर्वाह न करते हुए मुगल वंश से अपनी बहिन बेटियों के विवाह

महाराणा प्रतापसिंह जी
(चेतक घोड़े पर)
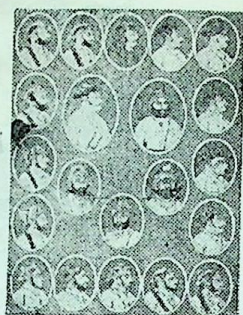
मेवाड़ के २१ महाराणा
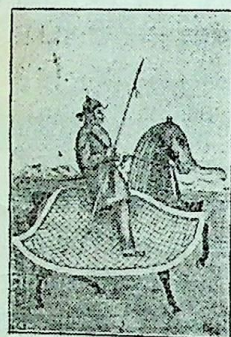
वीरवर रावत पत्ता जी चूंडावत

महाराणा अमरसिंह जी (प्रथम)

"हिन्दुस्तान के लोगों में आज, सबसे खासतौर पर हिंदुस्तान और हिन्दुस्तानी संस्कृति और परम्परा पर गर्व करने वाले अगर कोई हैं तो राजपूत हैं। उनके बहादुरी के कारनामे गुजरे हुए जमाने में इसी परम्परा के जिन्दा अंश थे······। कुछ राजपूत वंश ऐतिहासिक काल से भी पहले के बताये जाते हैं······। उदयपुर के महाराणा सूर्यवंशी हैं और उनका वंशवृत्त उसी तरह है जैसे जापान के मिकाड़ो का।"

—*भारत के प्रधानमंत्री श्री पं० जवाहरलाल नेहरू*

सम्बन्ध भी शुरू कर दिये थे। परन्तु महाराणा प्रताप अपने पूर्वजों की मर्यादा पर अटल थे और इसी लिये अकबर की आंखों में प्रताप सदा खटका करते थे।

इधर महाराणा भी रात दिन इसी चिन्ता में लगे रहते थे कि चित्तौड़ का उद्धार कैसे किया जाय, और विदेशी मुगल साम्राज्य के फैलते हुए फौलादी पंजे से मेवाड़ को कैसे सुरक्षित रक्खा जावे।

बादशाह अकबर ने आमेर के राजा भगवानदास कछवाहा के भतीजे कुँवर मानसिंह[1] कछवाहा को बहुत सी सेना के साथ डूँगरपुर और उदयपुर के राजाओं से शाही अधीनता स्वीकार कराने के लिये भेजा। मानसिंह ने डूँगरपुर ले लिया और सं० १६३० के आषाढ़ में महाराणा को समझाने के लिये उदयपुर आया। परन्तु महाराणा ने एक न सुनी। विदा होते समय महाराणा ने एक प्रीति भोज (गोठ) कुँवर मानसिंह को दिया। परन्तु उसमें महाराणा पेट दर्द का बहाना करके न आये। मानसिंह ने इसको अपना अपमान समझा। क्योंकि मुगल सम्राट से व्यवहार होने से महाराणा की दृष्टि में मानसिंह कछवाहा आदि नरेश तुच्छ गिने जाते थे। इस पर विदा होते समय प्रताप के सरदारों और मानसिंह में कहा सुनी भी हो गई। महाराणा ने मानसिंह से कहलाया कि यदि आप अपने बल पर मेवाड़ में चढ़ाई करोगे तो हम आपका स्वागत मालपुरे में करेंगे और यदि आप अपने फूफा (सम्राट अकबर) के बल पर पधारोगे तो जहां अवसर मिलेगा वहीं सम्भाल लेंगे। मानसिंह झुंझलाकर वहाँ से चल दिया। इधर महाराणा ने भी मानसिंह को भ्रष्ट समझ कर भोजन सामग्री तालाब में फिकवा दी और उस जमीन को खुदवा कर उस पर गंगाजल छिड़कवाया। जब अकबर को इस अपमान का वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो उसने विशाल शाही सेना के साथ मानसिंह को सं० १६३२ वि० में मेवाड़ पर भेजा[2]। मानसिंह

१—यह राजा भगवानदास के छोटे भाई भगवन्तदास के दूसरे पुत्र थे।
२ टाड राजस्थान भाग १ पृ० ३६१–६२।

मांडलगढ़ में रह कर सैनिक तैयारी करता रहा और वहाँ से चल कर हल्दीघाटी से कुछ दूर बनास नदी के किनारे छावनी डाली। महाराणा भी कुम्भलगढ़ से चल कर सेना सहित मानसिंह से तीन कोस की दूरी पर आ पहुँचा।

लड़ाई अभी नहीं छिड़ी थी। एक दिन मानसिंह अपने थोड़े से साथियों सहित शिकार खेलने गया। महाराणा के गुप्तचरों ने उन्हें इस बात की सूचना दी। सामन्तों ने महाराणा से कहा कि—"यह अच्छा मौका है, शत्रु को मार डालना ठीक है।" परन्तु महाराणा वीर थे, कायर नहीं। उन्होंने कहा "छल कपट द्वारा शत्रु को मारना क्षत्रियोचित कार्य नहीं है।"

वि० सं० १६३३ के द्वितीय ज्येष्ठ सुदि २ ता० ३० मई सन् १५७६ बुधवार के प्रातःकाल में हल्दी घाटी मैदान के पास दोनों सेनाओं का भयंकर युद्ध छिड़ा। यह युद्ध स्वतन्त्रता का था। पहले तो अकबर की सेना के पैर उखड़ गये परन्तु वह जैसे-तैसे लड़ती रही। मेवाड़ी सरदारों के अनेक वीर काम आये। दोनों ओर के लगभग ५०० सैनिक मारे गये। जब महाराणा अपने प्रसिद्ध घोड़े "चेटक" के जख्मी हो जाने के कारण गोगून्दे की तरफ मुड़े तो उनका पीछा दो मुगल सवारों और एक राजपूत ने किया। ये मुगल महाराणा को मारना चाहते थे परन्तु उस राजपूत वीर ने मार्ग में ही उनका काम तमाम कर दिया। और महाराणा के पास आकर चरणों में गिर पड़ा। यह वीर राजपूत महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह थे जो अकबर से जा मिले थे। परन्तु भाई की ऐसी अवस्था देखकर उनके हृदय में प्रेम उमड़ आया। और विपत्ति में सहायक बने। महाराणा का घोड़ा चेटक मर गया। इसलिये शक्तिसिंह ने अपना घोड़ा महाराणा को दे दिया और वापिस मुगल सेना के खेमे में चले आये।

हल्दी घाटी की लड़ाई में दोनों पक्ष वाले अपनी २ विजय होना लिखते हैं। उदयपुर के जगदीश के मन्दिर के वि० सं० १७०६ (ई० सन् १६५२) के शिलालेख से ज्ञात होता है कि इस युद्ध में महाराणा

महाराणा प्रताप के वंशधर
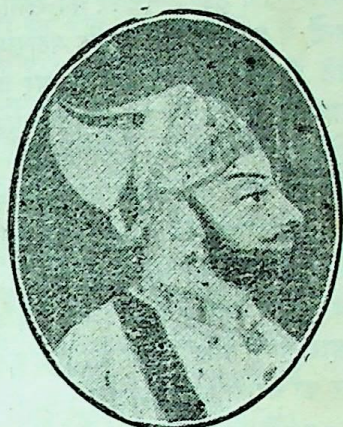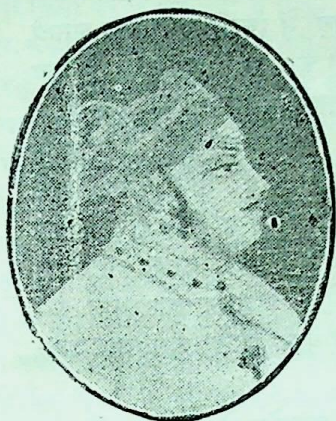
महाराणा राजसिंह जी (द्वितीय)

महाराणा अरिसिंह जी (द्वितीय)

महाराणा हम्मीरसिंह जी (द्वितीय)

महाराणा भीमसिंह जी

की ही जीत हुई । अकबर की सेना महाराणा के आक्रमण से डरती थी। उन्हें ये हर दम भय था कि महाराणा पहाड़ों में किसी जगह घात लगाये बैठे हैं और न जाने कब उन पर आक्रमण कर देवें । इस युद्ध के बाद शाही सेना गोगून्दे पहुँची परन्तु पहाड़ी इलाके में अन्न का प्रबन्ध न होने से सेना को आपत्ति झेलनी पड़ी। इधर महाराणा ने राजपूत सैनिकों और वीर भीलों की सहायता से सब पहाड़ी नाके और रास्तों को रोक लिया ताकि शाही सेना को खाने को अन्न न मिल सके। इस प्रकार शाही सेना चार मास तक गोगून्दे में पड़ी रही, परन्तु महाराणा का कुछ न बिगाड़ सकी। अन्त में शाही सेना अजमेर लौट गई तब महाराणा ने शाही थानों को उठा कर अपने थाने बैठाये। इस तरह अकबर का यह प्रथम आक्रमण वृथा गया।

इसके बाद भी सं० १६३३ में अकबर अजमेर से गोगून्दे शिकार के बहाने आया परन्तु महाराणा का कुछ नहीं बिगाड़ सका। यद्यपि छः मास तक महाराणा की राज्य सीमा में रह कर महाराणा को दबाने की कोशिश की। अकबर ने बारम्बार महाराणा पर सेना भेजी परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। क्योंकि मौका पाते ही महाराणा पहाड़ों से निकल कर फिर शाही थानों पर कब्जा कर लेते थे। उन्होंने शत्रु सेना का आगरे तक का रास्ता बन्द कर दिया था[1]। उदयपुर व गोगून्दे के शाही थाने उठा दिये थे और मोही का थानेदार भी मारा गया।

इन पहाड़ी युद्धों में महाराणा का व्यवहार शत्रु के साथ धर्मपूर्वक था। एक बार के आक्रमण में महाराणा के हाथ शाही सेनापति मिर्जाखां की औरतें आ गईं। महाराणा ने उनको बहन बेटी की तरह सम्मानित किया और आदर पूर्वक उनको मिर्जाखां के पास पहुँचा दिया।

बादशाह ने सं० १६३५ में एक और विशाल सेना मेवाड़ पर भेजी इस बार शाहबाजखां ने बैशाख बदि १२ को कुम्भलगढ़ और केलवाड़े पर कब्जा कर लिया और गोंगून्दे व उदयपुर को भी लूटा तथा राणा का

१ —मुंशी देवीप्रसाद, महाराणा प्रतापसिंह का जीवन-चरित्र पृ०२६।

पीछा किया परन्तु सफलता न मिली। इससे वह पंजाब में अकबर के पास चला गया[1]। इधर महाराणा छप्पन के पहाड़ों की ओर बढ़े और चांवड़ के स्वामी लूंणा राठोड़ को वहां से निकाल कर अपना अधिकार किया। इन्हीं दिनों महाराणा के प्रधान मन्त्री भामाशाह ओसवाल ने जिसने मालवे पर चढ़ाई करके २० लाख अशर्फियां और २५ लाख रुपये प्राप्त किये थे महाराणा के भेंट किये। ताकि शाही हमलों का मुकाबला किया जाय। कर्नल टाड ने अपने राजस्थान इतिहास में लिखा है कि जब महाराणा के पास सम्पत्ति न रहने से वे निराश होकर देश को छोड़ रहे थे उस समय उनके प्रधान भामाशाह ओसवाल—जिसके बाप दादे भी प्रधान पद पर रहे थे—अपना पीढ़ियों का संचित धन महाराणा को भेंट कर दिया[2]। उसे पाकर[3] महाराणा ने फिर अपना बल बढ़ाया। इसके बाद महाराणा ने कुम्भलगढ़ (कुम्भलमेर) पर फिर अपना अधिकार कर लिया और शाही थानों पर आक्रमण करना शुरू किया। यह सुनकर बादशाह ने सं० १६३५ के पौष मास में अच्छे २ सेनापतियों को मेवाड़ पर फिर भेजा। परन्तु फिर भी सफलता नहीं मिली, क्योंकि महाराणा ने अपनी प्रजा को खेती बाड़ी करने से रोक दिया और आज्ञा दी कि जो मुसलमानों को हासल (लगान) देगा वह मारा जायगा। किसान देश छोड़कर चले गये और कुल मेवाड़ उजड़ कर जंगल बन गया। शाही थानेदारों को खाने को अन्न तक नहीं मिला।

सेनापति मिर्ज़ाखाँ (खानखाना) ने भामाशाह से मिलकर महाराणा

१—अकबर नामा (अंग्रेजी) भाग ३ पृ० ३५३।

२— महामहोपाध्याय गौरीशंकर ओझा का मत है कि कर्नल टाड का यह कथन सत्य नहीं है। वास्तव में भामाशाह कावड़िया महाराणा का प्रधान मन्त्री व कोषाध्यक्ष था और महाराणा के पास अतुल सम्पत्ति थी। देखो ओझा कृत उदयपुर का बृहद् इतिहास भाग २ पृ०।

३—टाड राजस्थान भाग १ पृ० ४०१ (क्रक)।

को सम्राट अकबर के पास ले जाने का बड़ा प्रयत्न किया परन्तु भामाशाह ने स्वीकार नहीं किया

राजपूताने में प्रसिद्ध है कि एक दिन बीकानेर के राजा रायसिंह के छोटे भाई पृथ्वीराज राठोड़ से बादशाह अकबर ने कहा कि – "अब कोका[1], (प्रताप) मुझे बादशाह कहने लगा[2] है और मेरी आधीनता स्वीकार करने पर उतारू है।" पृथ्वीराज ने कहा—"बिलकुल झूठी बात है।" बादशाह ने कहा तुम ठीक खबर मंगा कर अर्ज करो। पृथ्वीराज अच्छा कवि था उसने निम्न दो दोहे महाराणा प्रतापसिंह के पास लिख भेजे –

पातल जो पतसाह, बोलै मुखहूंता बयण ।
मिहर पछम दिस मांह, ऊगे कासप राव उत ॥१॥
पटकूँ मूँछां पाण, कै पटकूँ निज तन करद ।
दीजे लिख दीवाण, इण दो मांहली बात इक ॥२॥

अर्थात् जिस प्रकार सूर्य का पश्चिम में उदय होना असम्भव है, उसी तरह प्रताप के मुख से अकबर के लिये बादशाह शब्द प्रयोग होना असम्भव है यदि यह हुआ हो तो लिखिये कि मैं अपनी मूँछों पर ताव दूँ अथवा आत्महत्या करलूँ ।

महाराणा ने जवाब में लिखा:—

तुरक कहासी मुख पतौ, इण तनसूं इकलिंग ।
ऊगै जांही ऊगसी, प्राची बीच पतंग ॥१॥
खुसी हूंत पथिल कमध, पटको मूंछां पाण ।
पछटण है जेतै पतौ, कलमाँ सिर कैवाण ॥२॥
सांग मूंड सहसी सको, समजस जहर सवाद ।
भड पथिल जीतो भलां, बैण तुरक सूं बाद ॥३॥

१—अकबर महाराणा प्रताप को कीका कहा करता था ।
२ महाराणा प्रताप अकबर को बादशाह नहीं कहता था वह उसे 'तुरक' नाम से सम्बोधित करता था ।

अर्थात्—इस शरीर से बादशाह तुर्क ही कहलावेगा । सूर्य पूर्व दिशा में ही उगेगा । हे वीर राठौर पृथ्वीराज ! जब तक प्रताप की तलवार मुसलमानों के सिर पर है तब तक आप अपनी मूंछों पर आनन्दपूर्वक ताव देवें । बराबर वाले का यश जहर के समान होता है, इसलिये प्रताप उसे न सह कर सिर पर साँग का प्रहार सहेगा । आप तर्क के विवाद में विजयी होवें ।" पृथ्वीराज यह उत्तर पाकर बड़ा ही प्रसन्न हुआ और उसने एक गीत महाराणा की प्रशंसा में लिख भेजा ।

कर्नल टॉड ने अपने इतिहास में लिखा है कि महाराणा ने अकबर का इस प्रकार सामना करने में और स्वतन्त्रता बनाये रखने में बहुत दुःख उठाया । यहां तक कि उसको कभी-कभी भोजन तक भी पहाड़ी प्रदेशों में प्राप्त नहीं होता था । परन्तु यह बात बढ़ाकर लिखी गई है । वास्तव में महाराणा के अधिकार में बहुत बड़ा पहाड़ी प्रदेश था और उनके अनुगामी पहाड़ी भील, मीने आदि वीर थे जो अपनी फूर्ति और कुशलता, स्वामिभक्ति के कारण महाराणा को कभी ऐसे दुःख का सामना नहीं होने देते थे । इसीलिये तो महाराणा ने एक बड़े साम्राज्य का मुकाबला अन्त तक सफलतापूर्वक किया था । और जहां अन्य नरेशों ने अपने राज्य बचाने ही को नहीं परन्तु बढ़ाने के वास्ते अपनी बहिन-बेटियाँ मुगलों को ब्याह दीं और स्वतन्त्रता खो बैठे, उस समय महाराणा प्रतापसिंह ही राजस्थान में एक वीर था जिसने अपने कुल की प्रतिष्ठा बनाये रखी और मरने तक बादशाह के आगे सिर नहीं झुकाया ।

जब बादशाह के कई बार मेवाड़ को अधीन करने के यत्न विफल हुए तब उसने आक्रमण करना छोड़ दिया । इसका कारण यह भी था कि उसको पंजाब और दक्षिण में अपनी शक्तियां लगानी पड़ीं । इससे महाराणा के अन्तिम दो वर्ष आराम से बीते । लेकिन महाराणा ने वि० सं० १६४३ में सिवाय चित्तोड़गढ़ व माँडलगढ़ के अपना सारा प्रदेश अधिकार में कर लिया । चित्तोड़ के लिये उसकी अन्त समय तक लालसा बनी रही ।

कहते हैं कि जब महाराणा मृत्यु शय्या पर लेटे हुए थे तो सरदारों ने उन्हें उदास देख कर पूछा तो प्रताप ने कहा कि "ज्ञात होता है कि मेरा उत्तराधिकारी कुँवर अमरसिंह देश की स्वतन्त्रता के लिये नहीं लड़ेगा और शाही खिलअत पहिनकर शाही दरबार में सिर झुकावेगा।" यह सुन कर सब सरदारों ने सोगंध खाई कि "वे महाराणा प्रताप के उद्देश्यों को पूरा करेंगे और सीसोदिया राजवंश की प्रतिष्ठा को बनाये रखेंगे। इससे महाराणा को सन्तोष हुआ और वह माघ सुदी ११ सं० १६५३ ई० (ता० १६ जनवरी सन् १५६७) को चांवंड गांव में परलोक सिधारे। इनकी मृत्यु का कारण यह बतलाते हैं कि एक समय शिकार खेलते हुए महाराणा ने बड़े जोर से धनुष चढ़ाया जिससे उन के पेट की आंत फट गई और इसी बीमारी से उनका शरीर छूटा।

चाँवंड गाँव से डेढ़ मील दूर वंडावली गांव के पास एक नाले के किनारे महाराणा का अग्नि संस्कार किया गया और उस जगह आठ खम्भों वाली सफेद पत्थर की एक छोटी सी छत्री बनी हुई है जो इस समय बे-मरम्मत पड़ी हुई है।

महाराणा के ११ रानियां थीं जिनसे १७ राजकुमार[1] हुए थे। महाराणा प्रताप के विषय में उनके समकालीन अनेक कवियों ने कीर्ति सूचक कविताएँ रची हैं। उनमें से राजस्थानी भाषा के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :—

अकबर पथर अनेक, कै भूपत भेला किया।
हाथ न लागो हेक, पारस राण प्रतापसी॥

अकबर ने राजा रूपी कई पत्थर अपने यहां इकट्ठे किये परन्तु पारस रूपी एक राणा प्रतापसिंह ही उसके हाथ नहीं आया।

करे न नामै कंध, अकबर ढिग आवै न ओ।
सूरज वंस संबंध, पालै राण प्रतापसी॥

१—अमरसिंह, भगवानदास, सहसमल, गोपाल, कचराजी, सांवलदास, दुर्जनसिंह, कल्याणदास, चन्द्रसिंह, शेखा, पूरणमल, हाथीजी, रामसिंह, जसवन्तसिंह, माना, नाथा और रायभाण।

महाराणा प्रताप के वंशधर

महाराणा जगतसिंह जी

महाराणा जगतसिंह जी—द्वितीय

महाराणा राजसिंह जी (प्रथम)

महाराणा जयसिंह जी

ईश्वर व खुदा एक हैं मन्दिर और मस्जिद जुदा नहीं है। इसलिए बादशाह को सब प्रजा के साथ समान बर्ताव करते हुए जजिया बन्द करना चाहिए। (महाराणा राजसिंह का पत्र औरंगजेब के नाम)

वह (प्रतापसिंह) अकबर के पास आकर कभी सिर नहीं नमाता है। राणा प्रतापसिंह तो सूर्य्यवंश की मर्यादा का पालन करता है (अर्थात सूर्य्य सब से ऊँचा ही रहता है और वह सूर्य्यवंशी है)।

लोपै हिन्दू लाज, सगपण रोपै तुरक सूं।
आरज कुल री आज, पूंजी राण प्रतापसी॥

हिन्दू (राजा) कुल की लज्जा को छोड़ कर तुर्कों (यवनों) से विवाह सम्बन्ध करते हैं, इस से अब तो आर्यकुल की सर्वस्व सम्पत्ति महाराणा प्रतापसिंह ही है।

सुष हित स्याल[1] समाज हिन्दु अकबर वस हुआ।
रोसीलो मृगराज, पजै न राण प्रतापसी॥

गीदड़ रूपी हिन्दु समाज सुख के लिये अकबर के काबू में हो गया परन्तु रोशीला (क्रोधी) सिंह रूपी राणा प्रतापसिंह उसके वश में नहीं आता।

अकबर समंद अथाह, तिंह डूबा हिन्दु तुरक।
मेवाड़ो तिण माँह, पोयण फूल प्रतापसी॥

अकबर रूपी अथाह समुद्र (जलाशय) में हिन्दू और मुसलमान डूब गये किन्तु मेवाड़ का स्वामी महाराणा प्रताप कमल पुष्प के समान उसके ऊपर ही शोभा दे रहा है।

थिर नृप हिन्दुस्थान, लतरगा मग लोभ लग।
माता भूमी मान, पूजै राण प्रतापसी॥

हिन्दुस्थान के प्राचीन राजवंश लोभ के मार्ग में चलते हुए थक गये, परन्तु हे मातृ भूमि ! तुमको मान से पूजने वाला राणा प्रतापसिंह ही है।

कलपै अकबर काय, गुण पूंगीधर गोड़िया।
मिणधर छावड़ मांय, पड़ै न राण प्रतापसी॥

सर्प रूपी अन्य राजाओं को वश में कर लेने पर भी अकबर का

१—गीदड़।

महाराणा प्रताप के वंशधर

महाराणा जवानसिंह जी

महाराणा सरदारसिंह जी

महाराणा सरूपसिंह जी

महाराणा शम्भूसिंह जी

शरीर दुःख पाता है क्योंकि राणा प्रतापसिंह जैसा मणिधारी सर्प पिटारे में नहीं आता (अर्थात् वश में नहीं होता)।

भागै सागै भाम, अमृत लागै ऊमरी।
अकबर तल आराम, पैषै जहर प्रतापसी॥

महाराणा अपनी स्त्री सहित भागते-फिरते हैं और ऊसर के फल उनको अमृत जैसे स्वादिष्ट लगते हैं, परन्तु अकबर की आधीनता में सुखपूर्वक रहने को वे जहर के समान मानते हैं।

गोहिल कुल धन गाढ़, लेवण अकबर लालची।
कोडी दैनँहँ काढ़, पण धर राण प्रतापसी॥

गोहिल (गहलोत) वंश रूपी गहरी सम्पत्ति को लालची अकबर लेना चाहता है, परन्तु प्रणवीर राणा प्रतापसिंह एक कौड़ी भी लेने नहीं देता।

अकबर जासी आप, दिल्ली पासी दूसरा।
पुन-रासी प्रताप, सुजस न जासी सूरमा॥

अकबर खुद चला जायगा (यानी मर जायगा) और दिल्ली दूसरे को मिल जायगी, अर्थात् दूसरा बादशाह हो जायेगा, परन्तु हे पुण्य के ढेर ! शूरवीर प्रतापसिंह तेरा यह सुयश नहीं जायगा (अर्थात् अमर रहेगा)।

महाराणा का कद लम्बा, नेत्र विशाल, चेहरा भरा हुआ और शौर्य्य सूचक मूंछें बड़ी खड़ी हुई, विशाल वक्षःस्थल, दीर्घ बाहु और रंग गेहुँआ था। प्राचीन रीति अनुसार वे दाढ़ी नहीं रखते थे। कर्नल टॉड ने महाराणा के विषय में लिखा है कि—"अकबर की उच्च महत्वाकांक्षा, शासन निपुणता और असीम साधन ये सब बातें दृढ़ चित्त महाराणा प्रताप की अदम्य वीरता, कीर्ति को उज्ज्वल रखने वाला दृढ़ साहस और निष्कपट अध्यवसाय को दबाने में असमर्थ थीं। आल्प पर्वत की तरह अर्वली (आडावला) में कोई भी ऐसी घाटी नहीं जो महाराणा प्रताप के किसी न किसी वीर कार्य, उज्ज्वल विजय या उससे

महाराणा प्रताप के वंशधर

महाराणा प्रतापसिंह जी (द्वितीय)

महाराणा संग्रामसिंह जी (द्वितीय)
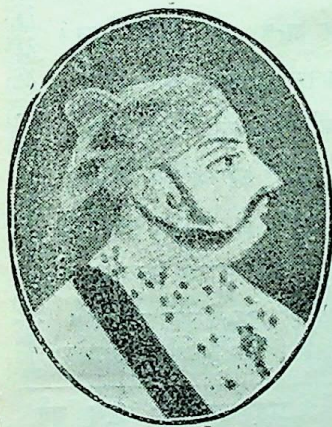
महाराणा अमरसिंह जी (द्वितीय)

"There is not a petty state in Rajasthan that has not had its thermoplya, and scarcely a city that has not produced its Leonidas."

--Col. Tod.

"राजस्थान में कोई छोटा-सा राज्य भी ऐसा नहीं है जिसमें थर्मापोली जैसी रणभूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले, जहाँ लियोनिडास जैसा वीर पुरुष उत्पन्न न हुआ हो।"

--कर्नल टाड

अधिक परिश्रम से पवित्र न हुई हो। हल्दीघाटी मेवाड़ की ... और दिवेर मेवाड़ का मेरेथान[1] है[2]।........" आज भी उ... कार्यों की गाथायें भारतीयों के हृदयों को उत्तेजित करती हैं। म... का नाम केवल राजपूताने में ही नहीं बल्कि सारे भारत में अ... श्रद्धा और आदर के साथ उच्चारण किया जाता है।

ओ स्वतन्त्रता के मतवाले

तेरा यश गाता है जहान, तेरा प्रताप जग में महान।
पर है न "मान" का नेक मान, खोया जिसने गौरव गुमान॥
पाले थे घर में ही काले, ओ स्वतन्त्रता के मतवाले॥

तू मरा आन पर और जिया, वह पर्ण किया प्रण जौन किया।
निज शान पै सब सुख त्याग दिया, परवाह न की दुःख भार लिया॥
अरि दल मुख पर ठोके ताले, ओ स्वतंत्रता के मतवाले॥

तेरा प्रताप पढ़ कर जीवन, कायर जाते नर केहरी बन।
हो त्वरित भुजाओं में फड़कन, होता स्वतन्त्रता प्रिय वह जन॥
तेरा जो गुण गौरव गा ले, ओ स्वतन्त्रता के मतवाले॥

तू मात्र भूमि का श्रेष्ठ लाल, तू क्रूर जनों का कठिन काल।
भारत मां थी तुझसे निहाल, काटे थे तै ने अमित जाल।
"गोपाल" पार कैसे पाले, ओ स्वतन्त्रता के मतवाले॥

—*कविवर स्व० श्री सिद्धगोपाल जी आर्य*

१—यह ग्रीस देश में एक प्रसिद्ध रणक्षेत्र है। जहां पर ई० सन् पूर्व ४९० में यूनानियों ने ईरानियों को अपने देश से मार भगाया था।
२—टॉड राजस्थान भाग १ पृ० ४०६-७ (क्रुक)।

महाराणा प्रताप के वंशधर
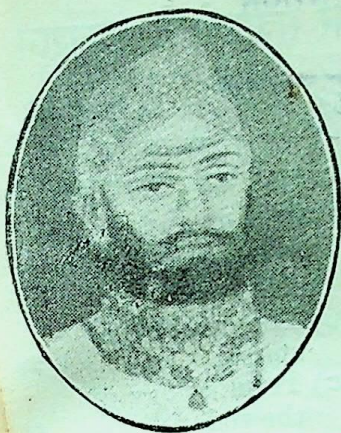
महाराणा सज्जनसिंह जी
(आपके निमन्त्रण पर महर्षि जी
उदयपुर गये)
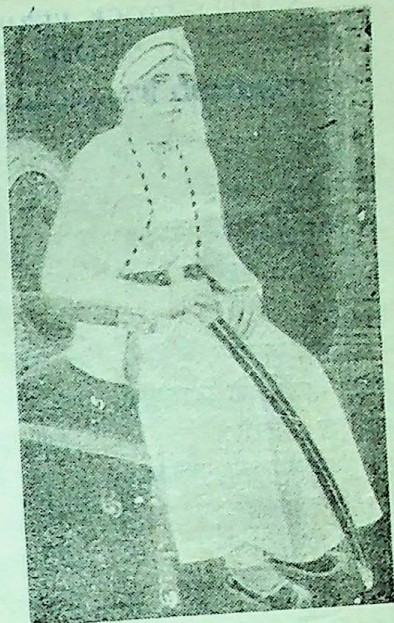
महाराणा फतेहसिंह जी
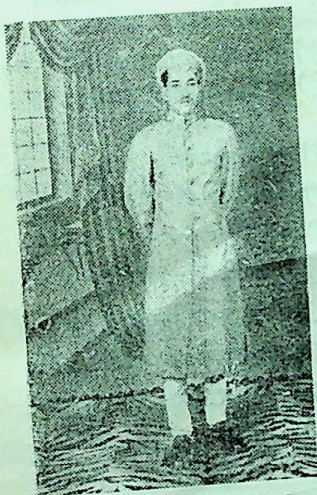
वर्तमान महाराणा हिज हाईनेस
श्री [illegible] सिंह जी
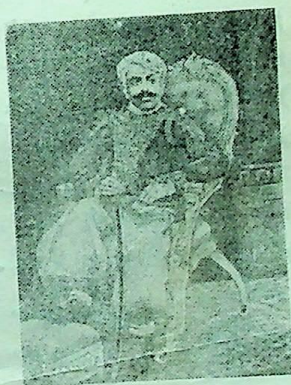
महाराणा भूपालसिंह जी

अत्यन्त सस्ता, सर्वोत्तम, और सर्वोपयोगी प्रकाशन

(१) सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ६५६ ।।।=)
(२) महर्षि दयानन्द सरस्वती ॥=)
(३) संस्कार विधि मू०।।।-)
(४) व्यवहार भानु ६८ पृष्ठ =)
(५) गो करुणानिधि ३२ पृष्ठ -)
सामवेद २)
आर्य समाज क्या है ।)
आर्य नेताओं के व्याख्यान ≡)
उपदेश मंजरी ।।)
(६) सीनेमा या सर्वनाश =)
(१०) प्रजापालन ३।।) सै०
(११) विदुर प्रजागर १)
(१२) नारद नीति ,, ।)
(१३) कणिक ,, ,, ≡)
(१४) बौद्धमत और वैदिक धर्म १।।)
(१५) उपनिषद सुधासार २।)
(१६) दैनिक यज्ञ प्रकाश ३२ पृ०-)
(१७) ऋषि दृष्टान्त प्रकाश =)
(१८) ब्रह्मचर्य साधन २४ पृ०)।।
महात्मा हंसराज -)
(२०) माता पिता आचार्य १) सै०
(२१) आर्योद्देश्य रत्नमाला २) सै०
(२२) खान-पान १) ,,
(२३) ऋषि की सुनो १) ,,
(२४) किसकी सेना में भरती होगे कंस की या कृष्ण की ।)
(२५) स्वमन्तव्या-मन्तव्य प्रकाश १) सै० अंग्रेजी में दो पैसा
(२६) Wisdom of the Rishis ४)
(२७) The life of the spirit २)
(२८) Terminology of the vedas १)
(२९) Righteousness or unrighteousness of flesh-eating. -)
(३०) Origin of thought and language =)
(३१) Pecunio mania ≡)
(३२) Man's progress downwards =)
(३३) आर्य सभ्यता ।-)।
(३४) आर्य डायरी ।।=)
(३५) स्वामी श्रद्धानन्द ५) सै०
(३६) आर्याभिविनय ।)
(३७) गोवध और सरकार २।) सै०
उदारतम आचार्य दयानन्द ।=)
महाराणा प्रतापसिंह -)
महर्षि दयानन्द ५) सैकड़ा

पता—सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज देहली ७ ।

अगर तुम नाराज होते हो, तो आइन्दा मैं तुम्हारे किसी काम में दखल न दूंगा।"

"तुम मेरे काम में तो दखल नहीं दोगे, लेकिन उस भले आदमी की तो तुमने काफी बेइज्जती कर दी।"

इसपर जीवनलाल बोला– "तुम तो कहते थे कि तुम उसे जानते नहीं और अब कहते हो कि वह एक शरीफ आदमी है। आखिर वह है कौन ? तुमने उसके साथी को रूपये किसलिए दिये ?

"तुम्हें इस मामले में कुछ न बताने की वजह से ही मैंने कहा था कि मैं उसे नहीं जानता हूं। मैंने यह भी सोचा था कि तुम्हें तो ऐसे कामों में दिलचस्पी है नहीं। रही सौ रुपये देने की बात। वह मैंने किसी खास मतलब से ही दिये थे।"

जीवनलाल कुछ देर के लिए चुप रहा। फिर बोला– "आजतक तो तुमने कोई बात मुझसे छिपाई नहीं। मालूम नहीं इस वक्त ऐसी कौन-सी खुफिया बात है, जो तुम मुझे नहीं बताना चाहते।"

"मैं जानता हूं कि आजतक मैंने कोई बात तुमसे नहीं छिपाई, मगर यह राज़ ऐसा है जिसे बताने में काफी नुकसान हो सकता है और जो तुम्हारे किसी मतलब का भी नहीं है। बाज़ राज़ ऐसे होते हैं कि उनको बताने में जिन्दगी भी खतरे में पड़ सकती है।"

इससे जीवनलाल को और ज्यादा शक हुआ। उसने राज़ जानने के लिए जोर दिया और कसम खाकर कहा, कि उसकी ओर से कोई नुकसान न होगा। इस पर मैंने कहा–"अच्छा, मुझे सोचने का वक्त दो। कल बताऊंगा।"

शाम को घर आकर मैंने यह किस्सा बोस बाबू को सुनाया। बोस बाबू ने जीवनलाल के बारे में कई बातें पूछीं। सब कुछ मालूम हो जाने

पर वह बोले– "ऐसा आदमी बेवकूफ, कमजोर-दिल और जाहिल होता है। उसका ऐसे काम में दखल नहीं होना चाहिए।"

इस पर मैंने बोस बाबू से उन सब रुकावटों का जिक्र किया जो उसकी वजह से पैदा हो सकती थीं। मैंने कहा– "मेरी अपनी मर्जी भी उसको बताने की नहीं है, मगर मजबूरी जान पड़ती है।"

"जैसी आपकी मर्जी।"—बोस बाबू ने जवाब दिया; "लेकिन मेरा अपना खयाल यह है कि उसे कुछ नहीं बताना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा मैं यहां दो दिन और हूं, उस वक्त तक टालते रहो, बाद में बता देना।"

मैंने उनकी सलाह मान ली और रहमतखां को 'एम' से दूकान पर मिलने से मना कर दिया।

दूसरे दिन सुबह जीवनलाल ने दूकान पर आते ही राज़ बताने पर जोर दिया। मैंने बहाना करते हुए कहा—"बीवी की बीमारी की वजह से सोचने का वक्त ही नहीं मिला।" यह सुन कर वह खामोश हो गया, मगर उसके चेहरे से मालूम होता था कि वह नाराज हो गया है। शाम को घर आने पर मालूम हुआ कि रहमतखां ने परसों जाने की तैयारी मुकम्मिल कर ली है; सिर्फ लारी में सीटें रिजर्व कराना बाकी रह गया है, जो कल हो जायगा।

सुबह दूकान पर जाते वक्त मैंने रहमतखां से कहा कि वह लारी पर सीट रिजर्व कराने के लिए दूकान होता हुआ जाय। शायद जब तक इटली की सफारत से कोई जवाब आ जाय।

मैं दूकान पर पहुंचा ही था कि जीवनलाल आ गया और कहने लगा—"अब तो राज़ बताने में कोई उज्र नहीं?"

"तुम घबराते क्यों हो?"—मैंने कहा। "जब मैंने एक दफा कह दिया तो जरूर बता दूंगा।"

: १५ :

भारी उलझन

हम बातें कर ही रहे थे कि करूनी साहब की बीवी दूकान पर आई। उसने मुझे एक लिफाफा दिया, जिसे जीवनलाल ने देख लिया। वह बहुत खुश थी और हंस-हंस कर बातें कर रही थी। जब मैंने उसकी खुशी की वजह पूछी, तो कहने लगी—"तुम भी इस रुक्के को पढ़ कर खुश हो जाओगे।"

"क्या जाने का इन्तजाम हो गया ?"—मैंने पूछा।

"हां, हो गया"—उसने कहा और बिना और कुछ बातचीत किये वह चली गई।

करूनी साहब की बीवी के आ जाने से जीवनलाल की राज़ जानने की ख्वाहिश और बढ़ी। अंग्रेजी न जानने की वजह से वह हमारी बातें समझ नहीं सका था, इसलिए कुरेद-कुरेद कर पूछने लगा—"वह सफेद-सा कागज क्या था, जो उसने तुम्हें दिया ?"

"कौन-सा कागज ?"—मैंने पूछा। "तुम जाग रहे हो या ख्वाब देख रहे हो ? कुछ पीकर तो नहीं आये ?"

"न तो ख्वाब देख रहा हूं, और न कुछ पीकर ही आया हूं। जब से मैं यहां पर आया हूं, तुम्हें बिल्कुल बदला हुआ पा रहा हूं। तुम्हारा कोई काम मेरी समझ में नहीं आ रहा है।" जीवनलाल ने कहा ।

"मैं तो वैसा ही हूं जैसा कि पहले था, तुम्हें गलतफहमी हो गई है ।"—मैंने कहा ।

इस पर जीवनलाल मुझसे सख्त नाराज हो गया और दूकान से चला गया। उसके जाने से मुझे खुशी हुई क्योंकि अब मैं वह रुक्का पढ़ सकता था, जो करूनी साहब की बीवी दे गई थी। उसमें लिखा था--

"जिस हरकारे को रोम से चलना था, वह चल पड़ा है और एक हफ्ते में यहां आ जायगा। चूंकि पासपोर्ट के लिए आपके फोटो की जरूरत होगी, इसलिए मेहरबानी करके आप परसों, ५ मार्च को, ११ बजे दारुलमान सड़क पर आ जायं। वहां पर आपको एक मोटर खड़ी मिलेगी, जिसका नम्बर . . . होगा । आप उसमें बगैर कुछ कहे बैठ जायं। ड्राइवर आपको फोटो लेने की जगह पर ले जायगा और फ़ोटो लेने के बाद आपको फिर उसी जगह पर वापिस पहुंचा जायगा, जहांसे आप मोटर में बैठेंगे ।"

मैं यह रुक्का पढ़ ही रहा था कि 'एम' आ गया। "क्या आपका वह दोस्त जिसे रूसी सरहद तक जाना है, आ गया ?"—उसने पूछा ।

"नहीं,"—मैंने कहा, "अभी तक तो नहीं आया; शायद शाम तक आ जाय। खबर आई है कि वह कुछ बीमार हो गया है।"

"अगर वह अभी तक नहीं आया है; तो हमारा कल जाना मुश्किल होगा।" 'एम' ने कहा ।

"क्यों ?"—मैंने पूछा ।

"अगर हम लारी की सीटें आज रिजर्व करा लेंगे, तभी कल जा सकेंगे। आजकल लारियां बहुत कम जाती हैं और जाने वाली सवारियां बहुत होती हैं।"

"कोई बात नहीं," मैंने कहा। "अब चूंकि वह बीमार है, इसलिए यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि आते ही वह फिर इतने लम्बे सफर पर चल देगा। आगे का प्रोग्राम तो उसके आने पर ही बन सकेगा।"

पौने दो बजे के करीब रहमतखां दूकान पर आया। मैंने हंस कर पूछा, "कहां जा रहे हो ?"

" 'एम' के साथ सीट रिजर्व कराने जाना है,"—वह बोला। इस पर मैंने उसे वह रुक्का पढ़ने के लिए दिया, जो करूनी की बीवी दे गई थी। पढ़ कर रहमतखां बोला—"अब क्या किया जाय ?"

"मेरा खयाल है कि अभी सीटें रिजर्व न कराई जायं। बिना बोस बाबू की सलाह के कोई काम नहीं करना चाहिए। इटली वालों के साथ जाने में किसी खास मुसीबत का सामना नहीं करना पड़ेगा और बोस बाबू यहांसे आराम से निकल जायंगे। दूसरे तरीके से जाने में खतरा बहुत है।"—मैंने राय दी।

" 'एम' से क्या कहा जाय ? दो बजे मुझे उससे मिलना है।" रहमतखां ने कहा।

"वह मेरे पास आया था। मैंने उससे कह दिया है कि मेरे आने वाले दोस्त ने खबर भेजी है कि वह कुछ बीमार है और यह मुमकिन है कि वह आते ही दूसरे सफर के लिए तैयार न हो।" मैंने कहा।

"यह आपने ठीक किया, मैं भी मिलकर उससे ऐसा ही कहूंगा।"

यह कह कर रहमतखां चला गया।

शाम को घर पहुंचने में देर हो गई। रहमतखां पहले ही बोस

बाबू को सफारत से आए रुक्के की बाबत सब कुछ बता चुका था। जब मैं घर पहुंचा, तो दोनों बातें कर रहे थे । मैंने रुक्का बोस बाबू के हाथ में दे दिया। पढ़ कर उन्होंने पूछा—"तुम्हारी क्या राय है?"

"मेरी राय की क्या; आप बतायें कि आपने क्या सोचा?" मैंने कहा।

"अभी तक तो कुछ नहीं सोचा है।" बोस बाबू ने कहा, "तुम्हारी इन्तजार थी। आओ बैठो, सब मिलकर सोचेंगे।"

"फिर भी, कुछ तो सोचा ही होगा।" मैंने बैठते हुए कहा, "अगर आप 'एम' के साथ जाना चाहते हैं तो शायद दो-तीन दिन तक इंतजार करनी पड़े।"

"क्यों?" बोस बाबू ने पूछा।

"अगर लारी में आज सीट रिजर्व करा ली जाती, तो आप कल जा सकते थे; लेकिन आज इस पैगाम के आने के बाद मैंने इस काम को रोक दिया।" मैं बोला।

"यह तो तुमने अच्छा किया।" बोस बाबू ने कहा। "अब अगर तीन दिन के बाद जाना है, तो मेरे खयाल में फोटो खिंचवाने में कोई हर्ज नहीं। गौर करने के लिए अब हमारे पास काफी वक्त है।"

"इटली वालों के साथ जाने में तो दस-बारह दिन से कम न लगेंगे।" बोस बाबू ने कुछ रुक कर कहा; "पैगाम में लिखा है कि हरकारा यहां करीब एक हफ्ते में पहुंचेगा। उसके आने के बाद भी दो-चार दिन लग ही जायंगे।"

"आपको किसके साथ जाने में फायदा है?" रहमतखां ने पूछा।

"अब इस मसले पर कल सोचेंगे।" बोस बाबू बोले।

"मगर जीवनलाल के साथ क्या किया जाय?" मैंने पूछा।

"आज उसने करूनी साहब की बीवी को पैगाम देते देख लिया और राज़ जानने के लिए वह मुझसे काफी देरतक झगड़ता रहा। आखिर वह नाराज होकर चला गया और उसके बाद दूकान पर नहीं आया। आदमी बड़ा बेवकूफ है, कहीं हमें नुकसान न पहुंचा दे।"

"मेरी सलाह तो नहीं है कि उसे कुछ बताया जाय, फिर भी चूंकि अब ज्यादा दिन रहना पड़ रहा है, इसलिए आप जैसा मुनासिब समझ करें। अगर हालत ऐसी हो गई है कि बिना बताये काम नहीं चल सकता, तो बता दें।" बोस बाबू ने कहा।

अगले दिन जीवनलाल दूकान पर फिर आ धमका।

"कल कहां गायब हो गये थे?" मैंने पूछा।

"यहां आकर क्या करता?" जीवनलाल ने कहा। "जब मेरे आने से तुम्हारे काम में खलल पड़ता है तो आने से क्या फायदा? आज भी आया हूं, तो सिर्फ एक बात मालूम करने आया हूं।"

"क्या कोई नई बात है?" मैंने पूछा।

"नहीं, कोई नई बात नहीं है। आज मैंने उस आदमी को, जो 'एम' के साथ था, हिन्दू गुजर में देखा था, इसलिए जानना चाहता हूं कि क्या वह आपके घर गया था।" जीवनलाल ने कहा।

"मेरा खयाल था कि इस राज़ के बारे में अब तुम दुबारा नहीं पूछोगे। मेरा खयाल गलत निकला।" मैंने कहा। "राज़ एक सियासी मसले से ताल्लुक रखता है। अगर किसीको पता लग गया तो जेल की हवा खानी पड़ेगी।"

जीवनलाल के बारबार यकीन दिलाने पर कि वह राज़ किसी और को जाहिर नहीं होने देगा, मैंने उसे बता दिया कि सुभाष बाबू आजकल काबुल में हैं। मैंने उसे यह भी बता दिया कि जिस आदमी को उसने

हिंदू गुजर में देखा था, वह बोस बाबू का साथी है। इस पर जीवनलाल जिद करने लगा कि मुझे बोस बाबू के दर्शन करा दो । उसके बारबार हाथ जोड़ने पर मैंने उससे कहा कि अच्छा बोस बाबू से पूछूंगा और अगर वह राजी हो गए, तो मिला दूंगा; नहीं तो लाचारी है।

शाम को घर आकर मैंने सारा किस्सा बोस बाबू को सुनाया। वह बोले—"जब उसे पता लग गया है, तो मिलने में क्या हर्ज है।"

उस रात हम काफी देर तक यह सोचते रहे कि बोस बाबू को 'एम' के साथ जाना चाहिए या इटलीवालों के साथ । पहले तो बोस बाबू कहा करते थे कि मास्को के सिवा वह कहीं और नहीं जाना चाहते; मगर उस रात उनमें मैंने कुछ तबदीली देखी। उन्होंने उस रात कुछ फैसला न करके अगले दिन के लिए छोड़ दिया।

सुबह बोस बाबू फोटो खिचवाने के लिए रहमतखां के साथ गए । २ बजे के करीब वह मेरी दूकान पर पहुंचे। मैंने उन्हें बताया कि आपकी आज शाम की चाय हाजी के घर है। एक-दो घण्टे आप बाजार की सैर करें और चार साढ़े-चार तक हाजी के घर पहुंच जायं । अगर मुझे फुरसत हुई, तो मैं भी वहां आ जाऊंगा ।

मैंने जीवनलाल को अबतक करूनी साहब की बीवी के बारे में कुछ नहीं बताया था, मगर वह भी बताना पड़ा। जीवनलाल ने बोस बाबू से मिलने के लिए मुझे फिर तंग किया। दूसरे दिन शाम को आते वक्त उसे साथ लाना पड़ा। बोस बाबू से मिल कर उसने जिस तरह की बातें करनी शुरू कीं, उनसे बोस बाबू समझ गये कि वह बेवकूफ और कमजोर-दिल का आदमी है।

इसके बाद से जीवनलाल करीब-करीब हर वक्त हमारे साथ ही रहता था और इस बात की कोशिश करता था कि हम उसे सारी

बातें बताते रहें। लेकिन, जब किसी काम की जरूरत पड़ती थी तो वह साफ इन्कार कर देता था। बोस बाबू या रहमतखां के साथ बाजार में तो वह एक कदम भी चलने से किनारा काट जाता था, लेकिन जब कभी करूनी साहब की बीवी दूकान पर आती थी, तो वह उससे बातें करने की कोशिश करता था और यह जताना चाहता था कि वह भी पंचवें सवारों में है ।

उसकी इस बेवकूफी का आखिर वही नतीजा निकला, जिसका हमें डर था। कहा जाता है कि उसने बाद में हिन्दुस्तान की सरकार को सब कुछ बता दिया, जिसकी वजह से मेरी भी गिरफ्तारी हुई। बगैर सबूत के मैं कोई राय तो कायम नहीं कर सकता, लेकिन जीवनलाल जब दुबारा काबुल आया, तो उसने खुद बताया कि पेशावर की खुफिया पुलिस ने आती दफा उसका पासपोर्ट रोक लिया था और कहता था कि तुम्हें इस शर्त पर काबुल जाने की इजाजत दी जायगी कि तुम वहां जाकर यह मालूम करो कि रहमतखां काबुल में है या नहीं। पहले तो मैं उन्हें यही जवाब देता रहा कि मैं उसे नहीं जानता, लेकिन जब उन्होंने मुझे रहमतखां की सब निशानियां और फोटो दिखाकर कहा कि वह तुम्हारे (उत्तमचन्द के) ही पास ठहरा होगा, तो मैंने सारी बातें बता देने का वायदा किया। इसपर उन्होंने मेरा पासपोर्ट मुझे वापस दे दिया।" उसने यह भी बताया कि पुलिस वालों ने उसको कहा था कि रहमतखां काबुल में हो, तो यह लिखना कि यहां पर काबुली रुमाल मिलते हैं; न हो तो लिखना कि यहां पर काबुली रुमाल नहीं मिलते ।

जब अफगान सरकार ने मुझे कैद करके मुल्क से निकाल दिया,

तो काबुलवालों ने जीवनलाल को भी डराया और कहा कि तू यहां से भाग जा, नहीं तो पुलिस तुझे भी पकड़ लेगी। मेरे हिन्दुस्तान आ जाने के आठ दिन बाद वह भी आ गया और आते ही पेशावर की पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

: १६ :

बर्लिन की तैयारी

जब मैं हाजी के घर पहुंचा तो बोस बाबू हाजी की जर्मन बीवी से जर्मन जबान में बातें कर रहे थे। चाय पीकर हम तीनों घर लौटे। रात को जाने के बारे में फिर बातचीत हुई।

"मेरा खयाल है कि आपको 'एम' के साथ जाना चाहिए।" मैंने कहा।

"क्यों ?" बोस बाबू ने पूछा।

अगर आप इटली या जर्मनी वालों के हाथ पड़ गए तो आप उनसे अपना पीछा न छुड़ा सकेंगे। दूसरे, यह भी तो नहीं मालूम कि अभी आपको यहां और कितने दिन रहना पड़े। जितने दिनों आप यहां इन्तजार करेंगे, उतने दिनों में मास्को जा पहुंचेंगे।"

बोस बाबू ने रहमतखां से सलाह पूछी।

"'एम' के साथ जाने में रास्ते में बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ेंगी।" रहमतखां बोला, "और यह भी मुमकिन है कि रूसी जेलों में आपको ज़्यादा वक्त तक रहना पड़े। फिर भी, उस रास्ते मास्को पहुंचने की उम्मीद जरूर हो सकती है।"

"अगर इटलीवालों की तरफ से आखिरी पैगाम नहीं आता, तो मैं 'एम' के साथ जरूर चल देता।" बोस बाबू ने कहा, "अब चूंकि इटली वालों की तरफ से कार्रवाई शुरू हो गई है, इसलिए उनके साथ जाने म इन्कार नहीं करना चाहिए। 'एम' के साथ जाने में रास्ते की दिक्कतों के अलावा यह भी खतरा है कि सरहद तक पहुंचने से पहले ही कहीं पकड़ न लिया जाऊं।"

बोस बाबू ने कुछ रुक कर फिर कहा—"आप दोनों का खयाल है कि इटली या जर्मनीवाले मुझे मास्को नहीं जाने देंगे। इस किस्म के शक को आप अपने दिल में जगह न दें। और, एक बात तो आप भूल ही गए। यह तो आप जानते हैं कि रूसी सफीर ने मुझे लेने से इन्कार कर दिया है, और साथ ही रूसी हुकूमत ने मुझे रूस होकर जाने की इजाजत नहीं दी है। मुमकिन है कि वे मुझे पसन्द न करते हों और अपने मुल्क में रहने की इजाजत न देना चाहते हों। मैं बर्लिन या रोम में रूसी सफारत से खुद मालूम करूंगा कि रूसी हुकूमत मुझे लेने के लिए तैयार है या नहीं। अगर वह तैयार हुई, तब तो मेरे जाने का बन्दोबस्त हो ही जायगा। नहीं तो मजबूरन बर्लिन या रोम में रह कर ही कुछ सोचना पड़ेगा।"

रहमतखां को बोस बाबू की बात पसन्द आई, इसलिए मैंने कहा—"अब जब आप दोनों ने इटलीवालों के साथ जाने का फैसला कर लिया है, तो 'एम' को भी कुछ जवाब दे देना चाहिए। मेरा अपना खयाल यह है कि रहमतखां उससे बचता रहे और मैं उससे कह दूं कि आने वाला आदमी सख्त बीमार पड़ गया है, इसलिए रहमतखां भी वापिस चला गया है।"

"यह जवाब ठीक है।" बोस बाबू ने कहा। "अब जाने की तैयारी करनी चाहिए। मेरे पास तो कोई कपड़ा नहीं है। दो सूट बनवा दीजिए और कल जब करूनी साहब की बीवी फोटो के बारे में बताने आये, तो

उसे मेरा रुक्का भी दे दीजिएगा। उससे पूछना है कि सफर में जिन चीजों की जरूरत होगी, उनका इन्तजाम मुझे खुद करना है या वे लोग करेंगे।"

सुबह रुक्का लेकर मैं दूकान पर गया। उसमें बोस बाबू ने लिखा था:–

"उम्मीद है कि मेरा फोटो ठीक आ गया होगा। अब चूंकि सफर की तैयारी करनी है, इसलिए मेहरबानी करके यह बतायें कि सफर के लिए जरूरी सामान का मैं खुद बन्दोबस्त करूं या आप करेंगे।"

तकरीबन ग्यारह बजे करूनी साहब की बीवी मेरी दूकान पर आई। उस वक्त जीवनलाल भी दूकान पर मौजूद था। करूनी साहब की बीवी ने मुझे एक रुक्का दिया और कहा कि बोस बाबू का फोटो ठीक आगया है। जब वह जाने लगी, तो मैंने उसे बोस बाबू का रुक्का दे दिया।

करूनी साहब की बीवी जो रुक्का दे गई थी उसमें लिखा था :—

"आपका फोटो साफ आया है। पास-पोर्ट भी तैयार हो गया है। हरकारे के आने की इन्तजार है। उम्मीद है कि तीन-चार दिन में आ जायगा। उसके आते ही आपको खबर भेज दी जायगी। आप जाने की तैयारी शुरू कर दें।"

अगले दिन करूनी साहब की बीवी बोस बाबू के खत के जवाब में एक परचा दे गई, जिसमें लिखा था—"बिस्तर का इंतजाम हमारी तरफ से होगा, बाकी चीजों का बन्दोबस्त आप खुद कर लें।"

सूट का कपड़ा पसन्द कराने के लिए मैं उसी दिन बाजार से पांच-सात नमूने ले आया। उनमें से दो को बोस बाबू ने पसन्द किया। सूट कैसे सिले, यह एक टेढ़ा सवाल था। न तो मैं दर्जी को घर पर ला सकता था और न बोस बाबू का दर्जी की दूकान पर जाना ही मुनासिब था। मैंने हाजी से दर्जी के बारे में बात की। उसने कहा—"मैं एक दर्जी को जानता हूं। वह मेरे तमाम कपड़े सीता है। बोस बाबू को मेरे

घर भेज दो। दर्जी वहां आ जायगा। उम्मीद है कि उनके जाने से पहले सूट सिल जायंगे।"

दूसरे दिन बोस बाबू मेरे साथ बाजार गए और एक बजे हम हाजी के मकान पर पहुंचे। वहीं दर्जी बुलाया गया और उसने नाप वगैरह लेकर चार दिन में सूट देने का वायदा किया। सूट तो वह वायदे पर दे गया, मगर वास्कट न ला सका। इस पर हाजी की जर्मन बीवी ने कहा--"वास्कट तैयार हो जाने पर मैं उसे पार्सल से अपनी बहन के पास बर्लिन भेज दूंगी, आप उससे ले लीजिएगा।" बाद में उसने वह वास्कट अपने वायदे के मुताबिक बर्लिन पार्सल से भेज दी।

दो दिन में सारा जरूरी सामान बाजार से खरीद लिया गया। मगर सवाल यह था कि सामान जाय कैसे। इसलिए बोस बाबू ने एक रुक्का लिख कर रहमतखां को इटालियन सफारत ले जाने के लिए दिया। उसमें लिखा था --

"सफर के लिए जो सामान मैं जरूरी समझता था, उसे मन खरीद लिया है। यह सामान किस तरह जायगा ? मैं इसे अपने साथ लाऊं या आप कोई और इन्तजाम करेंगे ?"

जिस दिन रहमतखां बोस बाबू का रुक्का दे आया था, उसके अगलेदिन करूनी साहब और उनकी बीवी दोनों मेरी दूकान पर आए। उन्होंने मुझे एक बन्द लिफाफा दिया, जिसमें लिखा था--

"जो सामान आपने अपने लिए खरीदा है उसे एक सूट केस में बन्द करके दूकान पर भिजवा दें। कल १६ मार्च को दोपहर को २ बजे बाद हमारा आदमी जाकर ले आयगा। आपको यहां से १८ मार्च को चलना है। इसलिए आप अपने साथी को लेकर १७ मार्च को करोशनी साहब (नायब सफीर) के घर नं०...

पर, जो शहरे नौ में हैं, पहुंच जायं। वहीं पर खाने का इन्तजाम होगा। बाकी बातें वहीं होंगी।"

जिस वक्त मुझे करूनी साहब का पैगाम मिला, बोस बाबू हाजी के घर पर थे। मैं खुशी-खुशी वहां गया और बोस बाबू से बोला--

"कुछ खिलाइए तो खुशखबरी सुनाऊं।"

"अफसोस," बोस बाबू बोले, "मेरे पास आपको खिलाने के लिए कुछ भी नहीं है। बस, यह केक है।" यह कहकर उन्होंने केक का एक टुकड़ा उठाकर मुझे दिया। और पूछने लगे कि क्या बात है? मैंने उसे लेते हुए कहा कि आपके सख्ती और परेशानी के दिन खत्म हो रहे हैं, और करूनी साहब का रुक्का उनक हाथों में दे दिया।

पैगाम पढ़कर बोस बाबू ने कहा– "मैं आपसे इतना खुश हूं कि पूछिये मत। जो सेवा और देशभक्ति आपने इस मुल्क में दिखलाई है, वह दाद के काबिल है। परमात्मा वह मौका जल्दी लाय, जब हम हिन्दुस्तान की गुलामी दूर कर सकें। इस वक्त मैं इससे ज्यादा और कुछ नहीं कह सकता।"

"मैंने तो अपना फर्ज अदा किया है। परमात्मा का लाख-लाख शुक्र है कि आपके यहां होते हुए कोई ऐसी बात नहीं हुई, जिससे आपके सियासी मकसद के पूरा होने में रुकावट पड़ती। अब तक तो आपको अपने मकसद में कामयाबी ही हुई है और आगे भी हो,--यही मेरी परमात्मा से दुआ है। अगर मुझसे या मेरे बच्चों से कोई गलती हुई हो, तो माफ कीजियेगा।" यह कहकर मैं बोस बाबू के पांव की धूल माथे पर लगाने के लिए झुका। उन्होंने मुझे हाथ से पकड़ कर गले लगा लिया और हंसकर कहा--"मैं तुम्हारी लड़की निम्मो (निर्मला) से जरूर नाराज हूं। खाना खिलाते वक्त वह बिना पूछे फुलके

दे जाया करती थी; दो की भूख होती थी, तो पांच खिला देती थी।"

शाम को जब हम हाजी के घर से चलने लगे, तो उसने १७ मार्च को दिन के खाने और शाम की चाय के लिए कहा। बोस बाबू ने इसे मंजूर कर लिया।

१६ मार्च को सारा सामान सूटकेस में बन्द करके दूकान पर भिजवा दिया गया और रहमतखां करोशनी साहब के मकान का नम्बर देखने के लिए गया। शाम को मालूम हुआ कि वह मकान देख आया है।

इस हफ्ते में 'एम' मेरे आनेवाले दोस्त के बारे में पूछने के लिए दो-तीन बार दूकान पर आया। हर बार मैंने उससे कह दिया कि वह अभी नहीं आया है। इन दिनों रहमतखां और कभी-कभी बोस बाबू भी मेरी दूकान पर आ जाते थे। मैं चाहता था कि 'एम' का मेरी दूकान पर आना-जाना बन्द हो जाय। मैं उससे कह चुका था कि रहमतखां वापिस चला गया है। खयाल था कि अगर उसने रहमतखां को मेरी दूकान पर देख लिया, तो काम बिगड़ जायगा।

अगली दफा जब वह आया तो मैंने कहा—"आज इत्तला आई है कि बुखार ज्यादा होने की वजह से वह वापिस हिन्दुस्तान जाना चाहता है। इसलिए रूस जाने का कोई इन्तजाम न किया जाय। चप्पल, लंगी और जितने रुपये बचे हों, वे सब मेहरबानी करके मुझे दे दो।"

यह मैं अच्छी तरह जानता था कि उससे रुपये मिलने मुश्किल हैं। मगर असली मकसद तो यह था कि उसका मेरी दूकान पर आना बन्द हो जाय। मकसद पूरा हुआ और उसके बाद छः मास तक भी उसने अपनी शक्ल न दिखाई।

ठीक दो बजे करूनी साहब की बीवी दूकान पर आई और सूटकेस लेकर चली गई।

: १७ :

मि० करोटना के रूप में

१६ मार्च की रात आखिरी थी, जो बोस बाबू ने मेरे घर पर गुजारी। उस रात उन्होंने दो चिट्ठियां लिखीं। एक अपने बड़े भाई के नाम, जिसमें उन्होंने काबुल पहुंचने और बर्लिन जाने के हालात लिखे और साथ में बहुत-सी घरेलू बातें भी लिखीं। उसी खत में उन्होंने अपनी माताजी से माफी मांगी और लिखा था कि मुमकिन है कि इस जिन्दगी में मैं आपके दुबारा दर्शन न कर सकूं।

दूसरी चिट्ठी उन्होंने अपने एक दोस्त को लिखी, जिसमें काबुल पहुंचने तक के हालात थे। बाद में मालूम हुआ कि उसने चिट्ठी लेने से इन्कार कर दिया था।

ये दोनों चिट्ठियां उन्होंने रहमतखां को दे दीं और १७ मार्च की सुबह वह नाश्ता करके और मेरे छोटे बच्चों को प्यार करके ११ बजे घर से चल दिये। सारे दिन वह हाजी के घर में रहे। हाजी की बीवी ने अपनी बहिन के लिए कुछ सामान और एक चिट्ठी भी दी।

शाम को करीब ८ बजे जब काफी अंधेरा हो गया तो एक किराये की गाड़ी लेकर हम तीनों करोशनी साहब के मकान की तरफ

चले। रास्ते में बोस बाबू ने हैट मुझे दे दिया और कराकुली की टोपी पहन ली। मैं बोस बाबू को पहुंचा कर वापिस आ गया। चलते वक्त उन्होंने कहा--"आगे होशियारी से काम करना। बर्लिन पहुंच कर खबर भेजूंगा।"

बोस बाबू से सियासी मसलों पर काफी बातचीत हुआ करती थीं। उन सबकी चर्चा यहां नहीं की जा सकती। फिर भी एक बात लिखना जरूरी है। वह यह कि बातचीत में अपने मुल्क के नाम के बारे में भी कई बार चर्चा हुआ करती थी। वह कहा करते थे कि हिन्दुस्तान, भारतवर्ष, इण्डिया वगैरा नाम ठीक नहीं हैं। कोई नया ही नाम होना चाहिए। आखिर में उन्होंने यह फैसला दिया कि हिन्दुस्तान के आजाद होने के बाद उसका नाम "आजाद हिन्द" रखा जाय। उससे पता चलता है कि मलाया पहुंचने के बाद उन्होंने जो कुछ किया, वह उनके दिमाग में तभी से मौजूद था।

जब बोस बाबू चिट्ठियां लिख रहे थे, तब मैंने उनसे अर्ज की कि आपके पास वक्त तो बहुत कम है, लेकिन मुमकिन हो, तो आप हिन्दुस्तान से गायब होकर यहां आने और यहां से बर्लिन या मास्को पहुंचने के मुकम्मिल हालात मुझे लिख कर भेजने की मेहरबानी जरूर करें। इस पर उन्होंने कहा कि अगर वक्त मिला तो मैं जरूर लिख कर भेज दूंगा।

× × ×

१८ मार्च को रहमतखां दस बजे मेरी दूकान पर आया। उससे मालूम हुआ कि ९ बजे सबेरे बोस बाबू दो जर्मन और एक इटालियन के साथ रवाना हो गए। इटलीवालों ने जो पासपोर्ट बोस बाबू को दिया था उसमें उनका नाम 'करोटना' लिखा था।

जो दो जर्मन बोस बाबू के साथ भेजे गए थे, उनमें से एक का नाम डाक्टर वेलर था। हाजी की जबानी मालूम हुआ कि वह आदमी बड़ा होशियार और चालाक था। कहा जाता है कि जर्मनों ने उस आदमी को इसलिए भेजा था कि उन्हें इस बात का खतरा था कि कहीं इटली वाले बोस बाबू को रोम में ही न रख लें।

करूनी साहब की बीवी से बाद में मालूम हुआ कि चारों आदमी एक मोटर में गए और उनका सामान दूसरी मोटर में। उसीसे यह भी मालूम हुआ कि बोस बाबू ने एक रात पुले-खुमरी में बिताई, जो रूसी हरहद के करीब है और जहां कपड़े का एक बड़ा कारखाना है। दूसरी रात उन्होंनें अफगानिस्तान की सरहद को पार कर रूसी मुल्क में बिताई। २० मार्च को वह रेल से मास्को की तरफ चल दिये। वहां से वह हवाई जहाज से बर्लिन पहुंच गये। जहां से कुछ दिनों बाद रोम जा सकेंगे। उसी दिन रहमतखां लारी से हिन्दुस्तान को वापिस रवाना हो गया।

कुछ दिन बाद जर्मन सफारत से एक रिसाला हाजी की मार्फत मुझे दिखाने के लिए भेजा गया।। उसके एक सफे पर ९–१० छोटे-छोटे फोटो थे। ये फोटो हिटलर, गोयरिंग, गोयबिल्स, रिबनट्राप, हिमलर वगैरह के थे। उन्हींके साथ एक फोटो बोस बाबू का भी था। सबके नीचे जर्मन जबान में कुछ लिखा हुआ था। वह रिसाला लेकर मैं हाजी की बीवी के पास यह जानने के लिए गया कि बोस बाबू की फोटो के नीचे क्या लिखा है ? उसके नीचे लिखा था–"हिन्दुस्तान के बड़े सियासी नेता और इंडियन नेशनल कांग्रेस के पहले के सदर, जो कुछ दिन हुए छिप कर हिन्दुस्तान से गायब हो गए थे, २८ मार्च को सही-सलामत बर्लिन पहुंच गए।"

: १८ :

पूछ-ताछ

बोस बाबू के काबुल से निकल जाने के कुछ दिन बाद एक आदमी रास्ते में मिला और बोला—"मैं आपकी दूकान पर ही जा रहा था। आपसे एक जरूरी काम है।"

मैं यह बात सुनकर बड़ा हैरान हुआ और समझ न सका कि इसको मुझसे क्या काम हो सकता है ? इस आदमी के बारे में यह मशहूर था कि वह अंग्रेजों का खुफिया है। वह अपने को बहुत बड़ा आदमी समझता था और अफगान बादशाह के यहां 'हाजिर बाशी' के रुतबे पर था। मैंने उससे पूछा—"कौन-सा ऐसा जरूरी काम है ?"

"वह काम आपके बिना और कोई नहीं कर सकता। अगर कर दें, तो बड़ा अच्छा हो।"

"ऐसा कौन-सा काम है, जो मेरे सिवा और कोई नहीं कर सकता ? मैं कोशिश करूंगा, अगर काम मेरे बस का हुआ।"

"आप कर सकते हैं, तभी तो मैं आपके पास आया हूं। यह

तो आप जानते हैं कि खान अल्लाह नवाजखां से, जो जर्मनी में अफगानिस्तान की तरफ से सफीर हैं, मेरे दोस्ताना ताल्लुकात हैं। आप शायद यह भी जानते होंगे कि हर सोमवार को वह आला हजरत 'बादशाह' से टेलीफोन पर बातें करते हैं।"

"मैं ये बातें नहीं जानता, मैं पहली ही बार आपसे सुन रहा हूं।"

"मुमकिन है कि आप न जानते हों, लेकिन काबुल में बहुत-से आदमियों को यह मालूम है। पिछले सोमवार को अल्लाह नवाजखां ने मेरे साथ भी टेलीफोन पर बातचीत की थी। उन्होंने कहा था कि कुछ मुद्दत हुई हिन्दुस्तान से दो हिंदू भाग कर अफगानिस्तान आये हैं। इस वक्त वे हिन्दू गुजर में किसी हिंदू के पास रहते हैं। उन्हें बर्लिन लाने के लिए जर्मन सफारत बड़ी कोशिश कर रहा है। मुझे इन बातों की जांच करने के लिए कहा गया है।"

"सफीर साहब ने आपको उन दोनों के नाम तो बताये होंगे?"

"नाम तो बताये थे और मैंने नोटबुक में लिखे भी थे; लेकिन, इस वक्त नोटबुक मेरे पास नहीं है। एक का नाम 'चन्दर बस' जैसा है।"

"क्या सुभाषचन्द्र बोस तो नहीं है?"

"हां, हां, यही नाम है।"

"यह तो हिन्दुस्तान का नामी लीडर है। बंगाल का रहनेवाला है। उसको गायब हुए दो महीने से भी ऊपर हो गये। आपको कहीं गलतफहमी तो नहीं हुई? मुझे तो यकीन नहीं आता कि एक नामी लीडर और वह भी बंगाली, जो अफगानिस्तान की जबान नहीं जानता, कलकत्ता से भाग कर किसी तरह काबुल आ सकता है। यह काम हंसी-खेल का नहीं है।"

"मैं क्या जानूं; जिस तरह सुना, आप से कह दिया। मेहरबानी करके यह मालूम कर दें कि वह किसके पास रहता है।"

"बाशी साहब, आप भी कमाल करते हैं। आपने यह तो बताया नहीं कि जिस हिन्दू के पास ये दोनों हिन्दुस्तानी रहते हैं, वह दाखला है या खारजा। जब मियां अल्लाह नवाजखां को इतना मालूम हुआ है, तो उन्हें यह भी मालूम होगा कि वे किस हिंदू के पास रहते हैं।"

"नहीं, उन्होंने यह नहीं बताया। फिर भी, पता लगाना कुछ मुश्किल नहीं है। अगर मैं हिंदू होता तो, हिन्दू गुजर में रह कर जरूर मालूम कर लेता। मगर मैं तो वहां पर जा भी नहीं सकता।"

"बाशी साहब, आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैं दूसरे मुल्क का रहने वाला हूं। सुबह दूकान पर आता हूं, शाम को घर जाता हूं। भला मैं इन बातों को कैसे मालूम कर सकता हूं! यह सियासी काम है, इससे मैं दूर ही रहता हूं। अगर यह काम आप किसी काबुली के सिपुर्द करें, तो अच्छा हो। खबर लगने पर मुझे भी बता दीजिएगा, ताकि मैं भी उनके दर्शन कर सकूं।"

"अगर यह काम आपसे नहीं हो सकता, तो कोई भी नहीं कर सकता। मेरे लिए तो यह जानना भी मुश्किल है कि वे यहां पर हैं भी या नहीं और आपको दर्शनों की पड़ी है।" बाशी ने कहा।

मैं मन ही मन सोच रहा था कि मियां अल्लाह नवाज खां की बात तो मनगढ़न्त है, इसको तो किसी और ही आदमी ने पता लगाने के लिए कहा होगा। मैंने कहा—"बाशी साहब मुझे अफसोस है कि मैं इस बारे में आपकी कोई खिदमत नहीं कर सकता। और कोई खिदमत हो तो कहिएगा। हां, आपने दूसरे आदमी का नाम तो बताया ही नहीं।"

"इस वक्त तो मुझे याद नहीं, कल बताऊंगा। आप इस काम को जरूर कर दें।" बाशी ने कहा।

मैंने सलाम करके उससे रुखसत ली और मन ही मन में सोचा कि हिन्दुस्तान की सरकार को तब होश आया, जब पंछी उड़ चुका।

अगले दिन बाशी साहब बाजार में इत्तफाक से मिल गये। उन्होंने दूसरे आदमी का नाम भी ठीक-ठीक बता दिया। नाम सुनते ही मेरे मुंह का रंग उड़ गया। मेरा खयाल था कि दूसरे आदमी का नाम सरकार को मालूम न होगा। बाशी साहब मेरी हालत भांप नहीं सके। मैंने भी अपने आपको जल्दी ही सम्हाल लिया और यह कह कर चला आया कि "अच्छा, कोशिश करूंगा और अगर कुछ पता लगा तो खबर दूंगा।"

मुझे शक हो गया था कि कहीं यह बात जर्मनी के खारजा दफ्तर से तो नहीं निकली है। मैंने सोचा कि अगर ऐसा हुआ, तो यह जानने में भी देर न लगेगी कि बोस बाबू काबुल में किसके पास रहे थे।

कुछ दिनों बाद करूनी साहब की बीवी अपने साथ एक जर्मन को लेकर मेरी दूकान पर आई। उसने नए आदमी की बाबत बताया कि वह जर्मन सफारत का एक सफीर है और बोस बाबू को बर्लिन पहुंचाने के बाद यहां आया है। मैंने उससे शिकायत करते हुए कहा कि आपके खारजा दफ्तर से यह खबर फैली है कि बोस बाबू काबुल में मेरे पास रहे। इसके बाद मैंने उसे बाशी साहब का सारा किस्सा कह सुनाया। इस पर उसने कहा कि हमारा दफ्तर इतना कमजोर नहीं है कि वहांसे इस तरह की बातें निकल सकें। फिर, यह बात तो बिल्कुल नामुमकिन है कि अफगानिस्तान

के सफीर को इन बातों का वहांसे कुछ पता लग जाय । इस पर करूनी साहब की बीवी ने कहा कि मुमकिन है कि पेशावर की पुलिस ने रहमतखां की पूछ-ताछ शुरू की हो। मैंने भी उसकी इस राय से इत्तफाक जाहिर किया। बाशी का जिक्र करते हुए मैंने कहा कि इस बेवकूफ की तरफ भी खयाल करो, जो आकर मुझसे ही बोस बाबू के बारे में मालूम करना चाहता है। मेरी इस बात पर वे हंसे और चल दिये।

बोस बाबू के जाने के करीबन तीन महीने बाद उनकी एक चिट्ठी हाजी की बीवी के पास जर्मन सफारत के जरिये आई। वह जर्मन जबान में टाइपशुदा थी। ज्यादातर तो उसमें हाजी की बीवी की बहिन के बारे में ही लिखा था और वास्कट के पहुंचने की इत्तला थी। मेरे लिए ये चंद लफ्ज थे, जिसका तर्जुमा हाजी की बीवी ने इस तरह किया:—

"उत्तमचन्द, नमस्ते ! आपका बहुत ही मशकूर हूं । आपकी इमदाद को मैं जिन्दगी भर कभी नहीं भूल सकता । बाकी काम होशियारी से करते जाना।"

—जियाउद्दीन।

जय हिन्द !

आजाद हिन्द जिन्दाबाद !!

वन्दे मातरम् !!!

रावलपिण्डी जेल

६–५–४५

हिन्दी की एक उदीयमान प्रकाशन-संस्था

नवयुग-साहित्य सदन, इन्दौर के प्रकाशन

[संग्रहणीय जीवन-प्रेरक और मननीय]

(१) साधना के पथ पर—श्री हरिभाऊ उपाध्याय सजिल्द ३)
(२) हमारी राजनैतिक समस्यायें–प्रो० शान्तिप्रसाद वर्मा सजिल्द ५)
(३) पागल—कवि खलील जिब्रान १)
(४) मनन—श्री हरिभाऊ उपाध्याय १।)
(५) रियासती जनता की समस्यायें—श्री वैजनाथ महोदय ।।।)
(६) गांधीवाद : समाजवाद—तुलनात्मक अध्ययन २)
(७) समाजवाद : पूंजीवाद—तुलनात्मक चर्चा २)
(८) पशुओं का इलाज—श्री परमेश्वरीप्रसाद गुप्ता २)
(९) चारादाना–उसके खिलाने के उपाय ,, ।)
(१०) राष्ट्रीय गीत—गीत-संग्रह ।)
(११) मालिक और मज़दूर—महात्मा टाल्सटाय १।)
(१२) पुत्रियां कैसी हों ?—श्री चतुरसेन शास्त्री १।।।)
(१३) नया रोजगार—श्री गोपालप्रसाद व्यास ३)
(१४) नेताजी : जियाउद्दीन के रूप में २)
(१५) गांधीवादी विधान—श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल १।।)
(१६) महाभारत के पात्र ,,
(१७) यन्त्रों की मर्यादा—महात्मा गांधी छप रही है
(१८) मौलाना आज़ाद—चरित्र चित्रण : महादेव देसाई ,,
(१९) दो रेखायें—कहानी संग्रह ,,
(२०) मात्रा—कहानी संग्रह—श्री कमला चौधरी ,,

इस पुस्तक की विशेषतायें

* देशभक्त सुभाषचन्द्र बोस की कलकत्ता से पेशावर और वहां से काबुल होकर की गई रहस्यपूर्ण यात्रा का यह सही विवरण है।
* नेताजी के अज्ञातवास में बिताये गये चार-पांच वर्षों के अत्यन्त रहस्यमय पचास दिनों की यह कहानी है।
* काबुल में अपने घर में नेताजी को आश्रय देने वाले श्री उत्तमचन्द इसके लेखक है।
* उनको आश्रय देने के लिए लेखक को काफी आर्थिक हानि सहनी पड़ी और चार वर्षों तक जेल की हवा खानी पड़ी।
* चार वर्षों के लम्बे जेल-प्रवास के दिनों में जेल की काल-कोठरी में बैठकर इसको लिखा गया है।
* कलकत्ता से पेशावर पहुंचने और इटली वालों से संपर्क स्थापित होने की कहानी नेताजी ने अपने श्रीमुख से स्वयं लेखक को सुनाई है।
* यह आत्मकथा सरीखी सुन्दर, नाटक सरीखी रोचक और उपन्यास सरीखी मनोरंजक है। भाषा और शैली में कुछ भी बनावट न होकर वह बिल्कुल सरल और स्वाभाविक है।
* इसकी आय का कुछ हिस्सा 'आजाद हिन्द फौज के पैरवी फंड' में और सरहद के 'लालकुर्ती फण्ड' में दिया जा रहा है।
* हिन्दी और उर्दू में यह प्रायः एक ही भाषा में (अलग अलग लिपियों में) प्रकाशित हो रही है।
* हिन्दुस्तान की प्रायः सभी भाषाओं और अंग्रेजी में भी यह प्रकाशित हो रही है।

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा ५० पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।